ट्रेक्टर ड्राईवरिंग कौशल के माध्यम से आजीविका सृजन

केस स्टोरी

नाम - तारा देवी पत्नी पप्पू लाल वर्मा
शिक्षा - साक्षर
गांव - चेनपुरा, पंचायत चेनपुरा
कृषि भूमि - 3 बीघा
ट्रेक्टर ट्रेनिंग अवधि - 12 दिन
आयोजक - विकासोन्मुख संस्थान, नरैना जयपुर (राजस्थान)
सहयोग - ब्रिजस्टोन इण्डिया प्राइवेट लिमीडेड

ट्रेनिंग से पूर्व

में मध्यम वर्ग से आती हूँ परिवार में आय का स्रोत मेरे पति की कमाई ही है वे "कारीगरी" का कार्य करते है।

मेरे पिताजी के खेती का कार्य था उनके पास ट्रेक्टर भी था मगर मेने कभी इसका स्तेमाल नहीं किया था हम 6 बहिने है जो खेती का काम करते थे अधिकतर पशुओ के लिए चारा सर पर ही लाते थे। उस समय मन तो बहुत करता था की ट्रेक्टर चलाना आ जाये तो चारा लाने का काम आसान हो जाये मगर पिताजी के सामने बोलने की हिम्मत नहीं होती थी सपने, सपने ही रह गए।

ट्रेनिंग के बाद

हमारी पंचायत को संस्थान ने बताया की आपके गांव में हम महिलाओ के लिए ट्रेक्टर ट्रेनिंग करवाने वाले है यह जानकारी मुझे गांव की महिलाओ से मिली में खुश हुई की मेरा बचपन का सपना अब पूरा हो जायेगा मगर परिवार की आर्थिक स्थिति ख़राब होने के कारण में इस ट्रेनिंग के समय खेतो में मजदूरी करने जा रही थी जिससे मुझे प्रति दिन 400 रुपये की आमदनी हो रही थी अब मेरे सामने निर्णय लेना मुश्किल हो रहा था की मजदूरी पर जाऊ या ट्रेनिंग करने यह बात पति को बताई तो उन्होंने मुझे सहयोग करते हुए समझाया की मजदूरी तो फिर मिल जाएगी मगर यह ट्रेनिंग बाद में मिलना मुश्किल है। तुम ट्रेनिंग पर जाओ सब अच्छा होगा।

में आज ट्रेनिंग करके बहुत खुश हूँ मुझे ट्रेक्टर सञ्चालन, पार्ट्स की जानकारी, खेतो में बुवाई, जुताई आदि अच्छे से आ गया है अभी हाल ही में खरीफ फसल के लिए किराये पर ट्रेक्टर लिया गया जिसमे ड्राइवरी का काम मेने स्वयं किया और लगभग 3000 की बचत की अभी मेरे ससुराल में खेती अधिक नहीं है मगर इस ट्रेनिंग ने मुझे कुशल ड्राईवर बनाया है मुझे RTO से चारपहिया वाहन का लाइसेंस भी मिला अब में अपना काम स्वयं करने के लिए स्कूटी लेने में हूँ जिससे मेरे घर के रोजमर्रा के काम और गांव से शहर जाने में आसानी होगी।

धन्यवाद विकासोन्मुख संस्थान और ब्रिजस्टोन का जिन्होंने ग्रामीण क्षेत्र में मेरी जैसी महिलाओ को अपने पेरो पर खड़ा करने में मदद की